अध्यायीकरण

प्रथम अध्याय– पृ०- १-५७

- जैनकुमारसम्भव महाकाव्य का महाकाव्यत्व

द्वितीय अध्याय– पृ०- ५८-८२

- जैनकुमारसम्भवकार की जीवन-वृत्त, कृतियाँ तथा जैनकाव्य साहित्य की तत्कालीन परिस्थितियाँ एवं प्रेरणाएं

तृतीय अध्याय– पृ०- ८३-१००

- जैनकुमारसम्भव की कथा का मूल कथावस्तु तथा उस पर प्रभाव

चतुर्थ अध्याय– पृ०- १०१-१२४

- पात्रों का विवेचन

पंचम अध्याय– पृ०- १२५-१८४

- जैनकुमारसम्भव में रस, छन्द, अलङ्कार, गुण एवं दोष

षष्ठ अध्याय– पृ०- १८५-२११

- जैनकुमारसम्भव की कलापक्षीय समीक्षा

सप्तम अध्याय– पृ०- २१२-२६४

- श्री जयशेखरसूरि कृत जैनकुमारसम्भव एवं महाकवि कालिदासकृत कुमारसम्भव का तुलनात्मक अध्ययन

अष्टम अध्याय– पृ०- २६५-२७१

- जैनकुमारसम्भव एक प्रेरणा श्रोत

नवम् अध्याय– पृ०- २७२-२८२

- परिशिष्ट एवं उपसंहार